

بحر کا نام:  
بحر کامل مثنیٰ سالم

ارکان:

مُتَّفَاعِلُنْ مُتَّفَاعِلُنْ مُتَّفَاعِلُنْ مُتَّفَاعِلُنْ

مُتَّفَاعِلُنْ	مُتَّفَاعِلُنْ	مُتَّفَاعِلُنْ	مُتَّفَاعِلُنْ
-++-+++	-++-+++	-++-+++	-++-+++

ردیف:

تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

قافیہ رقوانی :

تھا، کیا، ذرا، روٹھنا

بھولنا، آشنا، ادا، بتلا

غزل

مومن خان مومن

1800 - 1852

وہ جو ہم میں تم میں قرار تھا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو  
وہی یعنی وعدہ نباہ کا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

وہ جو لطف مجھ پہ تھے بیشتر وہ کرم کہ تھا مرے حال پر  
مجھے سب ہے یاد ذرا ذرا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

وہ نئے گلے وہ شکایتیں وہ مزے مزے کی حکایتیں  
وہ ہر ایک بات پہ روٹھنا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

کوئی بات ایسی اگر ہوئی کہ تمہارے جی کو بری لگی  
تو بیاں سے پہلے ہی بھولنا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

کبھی ہم میں تم میں بھی چاہ تھی کبھی ہم سے تم سے بھی راہ تھی  
کبھی ہم بھی تم بھی تھے آشنا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

وہ بگڑنا وصل کی رات کا وہ نہ ماننا کسی بات کا  
وہ نہیں نہیں کی ہر آن ادا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

جسے آپ گنتے تھے آشنا جسے آپ کہتے تھے با وفا  
میں وہی ہوں مومن بتلا تمہیں یاد ہو کہ نہ یاد ہو

Obaid Azam Azmi

www.azmi.in

03/11/2018

गज़ल  
मोमिन ख़ाँ मोमिन

1800 - 1852

वो जो हम में तुम में करार था तुम्हें याद हो कि न याद हो  
वही या'नी वा'दा निबाह का तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो जो लुत्फ़ मुझ पे थे बेशतर वो करम कि था मिरे हाल पर  
मुझे सब है याद ज़रा ज़रा तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो नए गिले वो शिकायतें वो मज़े मज़े की हिकायतें  
वो हर एक बात पे रूठना तुम्हें याद हो कि न याद हो

कोई बात ऐसी अगर हुई कि तुम्हारे जी को बुरी लगी  
तो बयाँ से पहले ही भूलना तुम्हें याद हो कि न याद हो

कभी हम में तुम में भी चाह थी कभी हम से तुम से भी राह थी  
कभी हम भी तुम भी थे आश्रा तुम्हें याद हो कि न याद हो

वो बिगड़ना वस्ल की रात का वो न मानना किसी बात का  
वो नहीं नहीं की हर आन अदा तुम्हें याद हो कि न याद हो

जिसे आप गिनते थे आश्रा जिसे आप कहते थे बा-वफ़ा  
मैं वही हूँ 'मोमिन'-ए-मुब्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो

बहर (बह) का नाम :  
बहरे कामिल मुसम्मन सालिम

अरकान  
(वो शब्द जिस से शेर की तक्ती करते हैं):

मु'तफ़ाइलुन मु'तफ़ाइलुन मु'तफ़ाइलुन मु'तफ़ाइलुन

मु'तफ़ाइलुन	मु'तफ़ाइलुन	मु'तफ़ाइलुन	मु'तफ़ाइलुन
11212	11212	11212	11212

रदीफ़ :  
तुम्हें याद हो कि न याद हो

क्राफ़िया / कवाफ़ी :  
था, का, ज़रा, रूठना,  
भूलना , आश्रा , अदा, मुब्तला

- ओबैद आजम आजमी

www.azmi.in

03/11/2018